

Padma Shri



PROF. VISHWA MURTI SHASTRI

Prof. Vishwa Murti Shastri is Jammu & Kashmir's Probably only personality who not only possesses profound knowledge of Sanskrit literature but also has immense Knowhow of Nyaya, Vedas, Sanskrit Vyakaran, Ritualism, Chhanda and Shastra. He is publicly recognized and respected for his relentless efforts and active participation in social work as well.

2. Born on 10th October, 1946 in the backward village Kasuri (Ghordi) of Udhampur district, Prof. Shastri, after achieving multiple milestones during 44+ years of honest service in teaching and administration, got retired in 2011 as a Principal from Sri Ranbir Campus of Rashtriya Sanskrit Sansthan, Jammu. During this long teaching period, he was also awarded with Best Teacher Award twice by the then Education Minister Dr. Karan Singh.

3. Prof. Shastri had special acumen in directing and acting in Plays. The practice of memorising the sacred scriptures [ancient Hindu Sanskrit manuscripts] is losing sheen in the current society, but he is still carrying this trend at the age of 75 gracefully and can narrate/chant the same for hours at a stretch and is still holding this forte with his restless efforts since he was 10 years old and leaving no stone unturned to keep the trend alive in society. He has been conducting free Veda classes for both needy and deserved. Along with teaching, he has earned special status in the hearts and minds of people with his preaching/lectures at the sacred shrine of Mata Vaishno Devi Darbar, Katra, J & K during Navratras which is telecast live worldwide on the Shraddha channel, M.H. channel, Doordarshan and other local channels every year since last two decades. He was also nominated as executive member of Amaranth Shrine Board by the then Honourable Governor.

4. Since many years, Prof. Shastri has been actively involved in informal Sanskrit education and its awareness /promotion at hundreds of centres through Sanskrit Bharti in and across J&K at various grass root levels. His lectures, promoting Indian Culture backed with scientific reasoning and rationale are very much appreciated by all sections of society during all key festivals and important occasions of social importance which is aired both on various radio and television channels since last two decades. Felicitation Volume "Vishwamurti Vaibhavam" which contains notes, write-ups, acknowledgements, poems etc by various dignitaries from his native state and other parts of India has been published on 4th December 2015 by the Hon'ble State Governor which in-itself is the proof of his multi-faceted, acknowledged and talented personality.

5. Prof. Shastri has bagged many Best Actor awards. He has been instrumental in achieving feat of winning First prize for directing stage plays 16 times. He is recipient of Indian President Award for excellence in Sanskrit literature and expertise in Shastras. He has also been honoured with "Sahitya Gaurav Shree" by Punjab Kala Sahitya Academy. He has also been awarded and honoured with various certificates and shields by State administration and recognized organisations. He has also been recognized/honoured by various autonomous institution bodies all over India for his supreme voluntary and selfless services to society, education, culture and literature.

पद्म श्री



प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री

प्रो. विश्वमूर्ति शास्त्री जम्मू और कश्मीर के शायद एकमात्र व्यक्तित्व हैं, जिन्हें न केवल संस्कृत साहित्य का गहरा ज्ञान है, बल्कि न्याय, वेद, संस्कृत व्याकरण, अनुष्ठान, छंद और शास्त्र का भी विपुल ज्ञान है। उन्हें इस दिशा में किये गए अथक प्रयासों और सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी के लिए जाना जाता है तथा सम्मानित किया जाता है।

2. 10 अक्टूबर, 1946 को उधमपुर जिले के एक पिछड़े गांव कसूरी (घोरडी) में जन्मे, प्रो. शास्त्री ने 44 वर्षों से अधिक की अध्यापन और प्रशासन में ईमानदार सेवा के दौरान कई उपलब्धियां हासिल करने के बाद, 2011 में श्री रणबीर राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जम्मू परिसर के प्रधानाचार्य के रूप में सेवानिवृत्त हुए। इस सुदीर्घ अध्यापन अवधि के दौरान, उन्हें तत्कालीन शिक्षा मंत्री डॉ. कर्ण सिंह द्वारा दो बार सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

3. प्रो. शास्त्री को नाटकों में निर्देशन और अभिनय में विशेष निपुणता प्राप्त है। पवित्र ग्रंथों (प्राचीन हिंदू संस्कृत पांडुलिपियों) को कंठस्थ करने की प्रथा वर्तमान समाज में विलुप्त हो रही है, लेकिन वे अभी भी 75 साल की उम्र में इस परंपरा को गर्व के साथ निभा रहे हैं और वे दस वर्ष की आयु से ही घंटों तक एक साथ इन ग्रंथों की व्याख्या और पाठ कर रहे हैं एवं उन्होंने इस वाचन परंपरा को जीवित रखने के लिए अथक प्रयास करते हुए जुटे हैं। वे जरूरतमंद और योग्य दोनों के लिए निःशुल्क वेद कक्षाएं संचालित करते हैं। अध्यापन के साथ-साथ, उन्होंने नवरात्रों के दौरान माता वैष्णो देवी दरबार, कटरा, जम्मू-कश्मीर के पवित्र मंदिर में अपने उपदेश / व्याख्यान जिसका दो दशकों से प्रतिवर्ष श्रद्धा चैनल, एमएच चैनल, दूरदर्शन और अन्य स्थानीय चैनल पर दुनिया भर में सीधा प्रसारण किया जाता है, के जरिये लोगों के हृदय और चेतना में विशेष स्थान अर्जित किया है। उन्हें तत्कालीन माननीय राज्यपाल द्वारा अमरनाथ श्राइन बोर्ड के कार्यकारी सदस्य के रूप में भी नामित किया गया था।

4. कई वर्षों से, प्रो. शास्त्री अनौपचारिक संस्कृत शिक्षा और इसके जागरूकता / प्रचार में सैकड़ों केंद्रों पर संस्कृत भारती के माध्यम से और जम्मू-कश्मीर में विभिन्न जमीनी स्तरों के कार्यक्रमों के माध्यम से सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं। वैज्ञानिक तर्क और मीमांसा के साथ भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने वाले उनके व्याख्यानों को सभी प्रमुख त्योहारों और सामाजिक महत्व के महत्वपूर्ण अवसरों के दौरान पिछले दो दशकों से विभिन्न रेडियो और टेलीविजन चैनलों पर प्रसारित किया जा रहा है, जिसे समाज के सभी वर्गों द्वारा अत्यंत सराहा गया है। उनके सम्मान में प्रकाशित पुस्तक "विश्वमूर्ति वैभवम्" जिसमें उनके मूल राज्य और भारत के अन्य हिस्सों के विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों द्वारा उनपर लिखे गए नोट्स, ललित निबंध, प्रशस्ति पत्र, कविता इत्यादि शामिल हैं, 4 दिसंबर 2015 को माननीय राज्यपाल द्वारा प्रकाशित किया गया जो उनकी बहुमुखी प्रतिभा, प्रतिष्ठा और उनके प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का प्रमाण है।

5. प्रो. शास्त्री को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए कई बार पुरस्कृत किया गया है। उन्होंने 16 बार नाटकों के निर्देशन के लिए प्रथम पुरस्कार जीतने की महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उन्हें संस्कृत साहित्य में उत्कृष्टता और शास्त्रों में विशेषज्ञता के लिए भारतीय राष्ट्रपति पुरस्कार से भी पुरस्कृत किया गया है। उन्हें पंजाब कला साहित्य अकादमी द्वारा "साहित्य गौरव श्री" से भी सम्मानित किया जा चुका है। उनको राज्य प्रशासन और मान्यता प्राप्त संगठनों द्वारा विभिन्न प्रमाणपत्रों और शील्डों से भी सम्मानित किया गया है। उन्हें समाज, शिक्षा, संस्कृति और साहित्य के लिए उनकी सर्वोच्च स्वैच्छिक और निस्वार्थ सेवाओं के लिए पूरे भारत में जाना जाता है तथा विभिन्न स्वायत्त संस्था निकायों द्वारा सम्मानित भी किया गया है।